

तानी कथाएं

जोराम यालाम नाबाम

अरुणाचल प्रदेश की सौ से अधिक जनजातियों में से पाँच बहुत बड़ी जनजातियाँ- न्यीशी, आदी, गालो, तागिन तथा आबोतानी एक ऐसे वृहद समूह के अंतर्गत आती हैं जिसमें प्रदेश की आधी से अधिक आबादी समाहित है। इसे तानी समूह भी कुछ लोग पहचान के लिए कह देते हैं। इन सबकी भाषा, संस्कृति, सामाजिक जीवन और मान्यताएँ अलग होते हुए भी उनमें परस्पर काफी समानता है। आबोतानी के बारे में लोगों को बहुत कम जानकारी है, जो कि इन सबके यहाँ पूर्वज माने जाते हैं। इसीलिए इन्हें तानी-परिवार या तानी वंश कहा जाता है। आबोतानी ने इस वृहत्तर समाज की मान्यताओं पर गहरा प्रभाव डाला है। उनसे संबंधित बहुत-सी कथा-कहानियाँ इन जनजातियों में प्रचलित हैं। कुछ लोक कथाएं निम्नलिखित हैं-

1- बेप्प रुक-सिबब गाक

उत्पाती, झगड़ालू चोर, लुटेरे किस्म के स्वभाव वाले लोगों को 'बेप्प रुक-सिबब गाक' कहा जाता है। बेप्प का अर्थ है- बंदरों सा स्वभाव । 'गाक' का अर्थ है- षड्यंत्रकारी। सौंदर्य के प्रति आणतानी की दृष्टि सबसे भिन्न थी। वह रूप-अरूप के हिसाब-किताब में पढ़ते नहीं थे। पत्नी के रूप में एक परम मित्र की तलाश थी और इसमें बाहरी रूप का महत्व कम हो जाता है। कहते हैं, एक मित्र की मदद से उनको 'बेप्प' समुदाय की एक पत्नी मिली। बंदर जैसी दिखने वाली। जैसा रूप वैसा ही स्वभाव था उसका। उत्पाती, झगड़ालू किसी से झगड़ा हो जाए और उसका पक्ष कमजोर लगने लगे, तो वह अपना नग्न चूतड़ दिखाती थी। थुहू-थुहू करके शत्रु की तरफ थूकती थी। उस वक्त वह बहुत ही घिनौनी लगती थी। छीना-झपटी में माहिर। इसीलिए तानी कबीले के लोगों ने उसको 'न्यिचिंग बेलिंग' अर्थात् लाल चूतड़ वाली बंदरिया के नाम से बुलाना शुरू कर दिया। तानी के लिए वह सिरदर्द तो थी ही, साथ ही उसके रिश्तेदार भी उससे किसी भी तरह कम नहीं थे। वह शेर थी, तो उसके परिवार वाले सवा शेर, "इतानी हमारा दामाद है। तानी हमारा दामाद है। कौन हमारा क्या बिगाड़ लेगा", यह कह-कहकर वे लोगों के नाक में दम कर देते थे। चोरी, लूट-पाट में बहुत ही आगे थे। मार-पीट और हत्या रोज का काम था उन लोगों का। उन लोगों ने तानी कबीले के कई लोगों की भी हत्या की थी।

हर दिन की शिकायतों से वह तंग आ गए। कभी मिथुन, कभी सुअर, कभी मुर्गियों इत्यादि से उनके अपराधों का जुमाना भरते-भरते बेहाल हो गए। पत्नी थी कि हर बात पर अपने मायके वालों का ही पक्ष लेते हुए, उनको भी उन्हीं का साथ देने को विवश करती रहती। उससे मुँह लगना ही अपने लिए मुसीबत को बुलाना होता था। जो बच्चे उस स्त्री से जन्मे, वे बिल्कुल अपनी माँ, मामा- मामी, मौसा-मौसी और नाना-नानी पर हुबहू गए। हर काम उल्टा ही करते थे। सब कुछ बिगाड़ देते। कहते थे, "संसार में हमारा राज है! तानी की संतानों का राज है।" बढ़ा-चढ़ाकर हर बात करते थे। कबीले वाले उनके उत्पात और

आतंक से सदा डरे रहते। तानी उस कबीले के सरदार थे, इन सब कारणों से वह बहुत दुखी रहने लगे। एक रोज तानी उन सभी को एक साथ बिठाकर समझाने का प्रयास करने लगा। वे समझने के बजाए लड़ने-झगड़ने लगे। मार-पीट पर उतर आए। पत्नी रो-रोकर आसमान सिर पर उठाते हुए बच्चों को लेकर मायके वालों के साथ चली गई.....। बेटी का इस तरह वापस घर लौटना अपमान है। अब तो युद्ध होना ही था। 'तानी-गंगियंग' अर्थात तानी की तेज बुद्धि और शक्ति से लड़ना आसान नहीं था। उसके लिए अच्छी तैयारी आवश्यक थी। तानी की चालाकियों का कोई भरोसा नहीं, क्या जाने सारे पुरुष युद्ध में वीरगति को प्राप्त हो जाएँ और पीछे भूखों मरते परिवार को छोड़ जाएँ। बेप्प कबीले के लोगों ने कई महीनों के लिए भोजन एकत्रित कर लिया। अनेकों विषैले तीरों को बनाकर भीषण युद्ध की तैयारी कर ली। इधर तानी कई दिनों बाद चैन की साँस लेते हुए आराम कर रहे थे। उन्होंने कोई तैयारी नहीं की। वह जानते थे, क्रोधी लोगों को बेवकूफ बनाना उनके बाएँ हाथ का खेल है। परिवार का ख्याल था, वरना पहले ही सारा खेल खत्म किया जा सकता था।

एक दिन शत्रु पक्ष के सारे पुरुष वर्ग मछली पकड़ने नदी को चले गए ताकि उन्हें सुखाकर महीनों खाया जा सके। नदी किनारे उनके तीर-धनुष रखे हुए थे। उन सभी लोगों का ध्यान नदी पर था। तानी ने 'अप्प-त-अर' जमा किया। उसे पीस-पीसकर महीन बनाया। उसके साथ सड़े हुए बदबूदार मीट मिला दिए। 'अप्प-त-अर' एक प्रकार की जंगली लताएँ हैं, जिसकी गंध बिल्कुल आदमी के पाद की तरह होती है। कई बार लोग उलझन में पड़ जाते हैं कि किसने पाद मारा? खैर, वह दबे पाँव आए, महीन चूर्ण को सारे तरकशों के अंदर डाल दिया। ढक्कनों को मजबूती से बंद करते हुए, उनकी रस्सियों का ऐसा ताना-बाना बुना कि कोई आसानी से उन्हें खोल न पाए और वह खुद झाड़ियों के अंदर छिप गए।

शाम को वे अपने-अपने तरकशों को शंकित-चकित होकर खोलने लगे। अरे, यह ताना-बाना किसने बुना? सारे तरकश बड़ी मुश्किल से खोले गए। बदबू अपना काम भयंकर रूप से करने लगा। "उहू, उहू, उहू, छी, छी इसमें तो बदबू घुस गई है। ये तो उस बदमाश तानी का ही काम होगा ! ओह, अब यह किसी काम का नहीं है", कहते हुए वे अपने-अपने तीर, तरकशों को नदी में फेंकने लगे। धनुर्धारी तानी ने बिना मौका दिए तुरंत उनकी तरफ तीरों की बरसात कर दी। ... सारे के सारे मारे गए। तानी इस युद्ध में अकेले थे। अपने कबीले के लोगों की जानें वह यूँ ही कभी गँवाते नहीं थे।

2- कुसुक-दूरंग

पतझड़ का मौसम था। पीले पत्ते शाखाओं से टूट-टूट कर गिर रहे थे। हवाओं में उनका लहराते हुए धीरे-धीरे गिरना कितना सुंदर लगता है! पेड़ों पर, जमीन पर, उनकी मर्मर की ध्वनि युवतियों की सुंदर चुहलबाजी सी लगती है। आबोतानी बहुत ही ध्यान से यह सब देख रहे थे। उनका शरीर नृत्य बनकर थिरकने लगा। उनको होश ही नहीं रहा कि कुछ लड़कियाँ उन्हें देख रहीं हैं। जब वे हँसने-खिलखिलाने लगीं, उनकी आवाज से उसका नाचना थम गया। कितनी प्यारी लड़कियाँ थीं, पेड़ों पर नाचते पत्तों सी। वे लकड़ियाँ बीनने आई होंगी। उन्हीं में दूरंग नामक एक दुबली- पतली और अलसाई सी आँखों वाली सुंदर

सी लड़की थी। दोनों की आँखें चार हुईं। प्रथम प्रेम...। बिना किसी लाग-लपेट और छान-बीन के, दोनों साथ रहने लगे। चार बच्चे हुए। कम उम्र में ही दोनों माता-पिता बन गए। तानी को पहली बार पारिवारिक जिम्मेदारियों का अहसास हुआ। वह रात-दिन एक करते हुए भोजन-पानी का इंतजाम करने लगे। पत्नी सूखे पत्तों सी संवेदनहीन थी। बहुत ही सुस्त। उसका अपना कोई निर्णय नहीं होता था, न ही बच्चों पर उसका नियन्त्रण। तानी उसे 'कुस्सुक-दूरंग' कहकर बुलाने लगे, जिसका अर्थ होता है दृ सूखे पत्ते। मानो उसमें कोई प्राण ही न हो। हवा की मर्जी से चलती-फिरती थी।

उस स्त्री से जो संतानें जन्मीं, वे मक्खी-मच्छरों की तरह पिता का खून की चूसने वाली थी। शरीर आदमी का, परंतु मन और बुद्धि से पशु। सुस्त और निकम्मे। पानी लाने को कहो, तो जॉकों की तरह न में सिर झुका लेते। भरपेट खाओ, पड़े रहो। चटाई की तरह सुबह जिस तरह रखा गया, शाम तक वैसे ही पड़े रहो। स्वयं करवट तक नहीं लेना। लकड़ियाँ लाने को कहो, तो करवट बदल कर सो जाते। शिकार पर चलने को कहो, तो आसमान सिर पर उठा लेते।

इसी कथा के चलते एक मुहावरा प्रचलित हो गया- 'ओस्स बू न्यी-अ-तारंग-तापिक हबे रीदू नला।' इसका अर्थ है- सुस्त लोग मक्खी-मच्छरों जैसे तकलीफदेह, कोपजनक और चिढ़ पैदा करने वाले होते हैं। लोग जंगली केलों और उसके तनों को उबाल-उबाल कर खाते थे। फल और सब्जियाँ उन्हें बचाते थे। भोजन की तलाश में तानी दिन-रात जंगलों का खाक छानते-फिरते। जिस दिन शिकार नहीं मिलता, भूखे पेट रहना होता था। घर था, लेकिन वह उनका अपना ही नहीं था। भोजन के लिए की-कीं, छीं-छीं करते परिवार में वह नितांत अकेले हो गए। पत्तों का मर्मर तानी को सुनायी नहीं देता था अब, न ही उनका हवा में लहराकर गिरना दिखाई देता था। ध्यान सिर्फ भोजन पर था।

अपरिपक्व उम्र थी, स्त्री-पुरुष के मिलकर चलने का अर्थ वे अभी नहीं समझ सके और दोनों से अपना परिवार संभाला नहीं गया। पर्याप्त भोजन के अभाव और अपने निकम्मेपन के कारण बच्चे कुपोषण के शिकार हो गए। बहुत कम उम्र से ही जिंदा रहने के तरीके सीखने पड़ते थे, जो वे नहीं सीख सके। भूख और बीमारी से सबकी मृत्यु हो गई...।

कुस्सुक-दूरंग तानी को छोड़कर अपने माता-पिता के पास लौट गई...।

संपर्क : सहायक आचार्य, हिंदी विभाग,

राजीव गांधी विश्वविद्यालय, ईटानगर

अरुणाचल प्रदेश